© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

मेघदूतम् में प्रकृति चित्रण

दीपचन्द यादव
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

महाकवि कालिदास सरस्वती के अमर पुत्र तथा सुरभारती के सनातन शृंगार हैं। केवल भारतीय साहित्य में ही नहीं, अपितु विश्व साहित्य में भी उनका अद्वितीय स्थान है। उनका साहित्य एक ऐसी अनुपम रत्न–राशि है, जिसमें से भाषा भाव तथा कल्पना के अमूल्य रत्नों को लेकर परवर्ती साहित्यकारों ने अपनी कला को अलंकृत तथा काव्य सम्पदा को समृद्ध बनाया है। कालिदास वर्णन करने में असाधारण पटु हैं। वे प्रत्येक वस्तु का सजीव सा वर्णन करते हैं। उन्होंने वृक्षों, वनस्पतियों, पशु–पक्षियों, नदी, पर्वत, तालाब आदि का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है।

कालिदास के जन्म को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इनका जन्म प्रायः पहली से तीसरी शताब्दी के बीच ईसा पूर्व माना जाता है। इनके जन्म स्थान के बारे में कोई स्पष्ट मत नहीं है। कुछ विद्वान् इन्हें मालवनिवासी मानते हैं। परन्तु मेघदूतम् में कालिदास ने जिस आत्मीयता के साथ उज्जयिनी का वर्णन किया है, उससे यह ज्ञात होता है कि महाकवि की जन्मभूमि उज्जयिनी अथवा उसके आस–पास कहीं अवश्य रही होगी।

कालिदास के नाम से कुल 41 ग्रन्थों की रचना हमें प्राप्त होती है परन्तु इनमें से सात रचनायें महाकवि कालिदास की मानी जाती हैं जो इस प्रकार है–

काव्य ग्रन्थ– 1. रघुवंशम्

2. कुमारसम्भवम्

3. मेघदूतम्

4. ऋतुसंहार

नाटकग्रन्थ– 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्

2. मालविकाग्निमित्रम्

3. विक्रमोर्वशीयम्

'मेघदूतम्' संस्कृत साहित्य का वह जाज्वल्यमान हीरक है, जिसकी प्रभा समय के प्रवाह से और भी अधिक बहती जाती है वह बड़ी ही आनन्दमयी घड़ी थी, जब महाकवि कालिदास ने इस अमरकाव्य की रचना की थी। वाह्य प्रकृति की मनोरम झाँकी प्रस्तुत करने में अन्तस्तल में सतत उदय होने वाली भावों के चित्रण में यह काव्य अतुलनीय है। किसी विरह से व्याकुल प्रेयसी के पास मेघ को प्रेम का सन्देशवाहक दूत बनाकर भेजने की कल्पना ही विश्व के साहित्य में अपूर्व कोमल तथा हृदयावर्जक है।

मेघदूत में प्रकृति चित्रण आरम्भ में ही रामगिरि आश्रम के उस प्रदेश से होता है, जहाँ के वृक्ष कोमल छाया वाले एवं तालाब के जल सीता जी के स्नान से पावन है।[प] मेघदूत के पूर्वभाग (पूर्वमेघ) में कवि प्रकृति के सुमधुर चित्रण में ही लगा रहता है। यक्ष द्वारा मेघ के प्रति किया हुआ मार्ग–वर्णन प्रकृति की जो रमणीय झाँकी प्रस्तुत करता है, उसे देखकर सहृदय का हृदय आनन्द विभोर हो जाता है। अलकापुरी का मार्ग मेघ को यक्ष इस प्रकार बताता है कि–

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रैः
त्वय्यारुढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थाम्
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।।[पप]

मेघ जिस–जिस मार्ग से होकर आगे की तरफ बढ़ता जाता है वह उस–उस जगह अपनी छाप छोड़ता जाता है। सारंगों द्वारा मेघ के मार्ग की सूचना ऐसे प्राप्त हो जाती है कि जब मेघ वर्षा करके आगे बढ़ता है तो जल बरसने के कारण पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे

होंगे, प्रथम जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और वर्षा ऋतु में पहली बार वर्षा जल के कारण पृथ्वी से निकल रही गन्ध को गज समूह सूंघ रहे होंगे, इस प्रकार भिन्न–भिन्न क्रियाओं को देखकर मेघ के गमन मार्ग का स्वतः अनुमान हो जाता है।[पपप] प्रकृति से मानव जाति का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अन्तःकरण को प्रभावित करती है। मेघदूत में कवि ने इसी तथ्य को उजागर किया है–

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः।
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।।[पअ]

अर्थात् मेघ को देखकर सुखी जनों का चित्त जब विचलित हो जाता है तो फिर जो वियोगी जन हैं उनका कहना ही क्या, इसका तात्पर्य यह हुआ कि उनमें तो विचलन स्वाभाविक ही है। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख–दुःख में सहभागिनी निरुपित किया है।

नदी की सुरम्यता और उसके मधुमय अवदानों ने कवि को इतनी विमुग्धता और तन्मयता प्रदान की है कि उसे नदी नायिका सी प्रतीत होती है। यक्ष मेघ से कहता है कि हे मेघ! उज्जयिनी के मार्ग में निर्विन्ध्या नदी बहती है जो तुम्हें अपने हाव–भाव से अपनी ओर आकृष्ट करेगी और किस प्रकार तुमको अपनी ओर आकृष्ट तो सुनो–तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात् मस्त होकर चलने वाली और भंवर रूपी नाभि को दिखाने वाली वह निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव–भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना का वचन होता है।[अ]

फिर तुरन्त ही कवि ने निर्विन्ध्या को विरहिणी के रूप में भी चित्रित किया है। वेदना की व्याकुलता का यह अनूठा प्रकृति–चित्रण है। निर्विन्ध्या नदी की धारा वेणी की तरह पतली हो गयी है और तट पर के पेड़ों के पीले पत्ते झड़ कर उस पर आ गिरे हैं, जिससे उसकी कान्ति पीली पड़ गयी है। इस प्रकार निर्विन्ध्या विरही–कृशाङ्गी की तरह जान पड़ती है। यह

मेघ–प्रियतम का ही सौभाग्य है कि उसके लिये कोई घुल–घुल कर क्षीण होती जा रही है तब यह मेघ का धर्म हो जाता है कि वह वर्षा करके उसकी इस कृशता को दूर करे।

वेणीभूतप्रतनुसलिला तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभग! विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः।।[अप]

महाकवि कालिदास की प्रवृत्ति भावों को उद्दीप्त करने के लिये प्रकृति के रमणीय चित्र उपस्थित करने की ओर अत्यधिक आग्रह रखती है। यही कारण है कि कालिदास ने प्रकृति के उपादानों का आलम्बन रूप में ग्रहण कर काव्य को चिरनूतन सौन्दर्य प्रदान किया है। मानव जीवन की चिरन्तन लालसाओं की उपेक्षा न कर कवि ने उसकी अनिवार्य अपेक्षा के आग्रह का आदर किया है।

शिप्रातट की वायु के माध्यम से यक्ष अपनी प्रियतमा को जिस प्रकार सन्देश भिजवाता है वह अत्यन्त सुमधुर, आकर्षक एवं चमत्कारिक है। सुबह–सुबह शिप्रातट पर सारसों का स्पष्ट मधुर स्वर क्षण–प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा है और खिलते हुए कमलों के सुगन्ध से सुशोभित और शरीर को अच्छी लगने वाली शिप्रा की वायु याचना करने में चापलूस प्रियतम की भाँति रतिश्रान्त रमणियों की थकावट को दूर कर देता है।[अपप]

पुनः यक्ष कहता है कि हे मेघ! मार्ग में जब तुम आगे बढ़ोगे तो तुम्हें गम्भीरा नदी मिलेगी। तुम उस गम्भीरा नदी के स्वच्छ जल में स्वभावतः प्रवेश कर जाना क्योंकि तुम कुमुद–पुष्प के समान धवल, चंचल मछली के उलटने रूपी चितवन को धृष्टता से विफल करने योग्य नहीं हो।[अपपप] पुनः आगे सरस्वती नदी का जल मिलेगा जो तुम्हें भीतर से तो शुद्ध कर देगा लेकिन तुम्हारी वाह्य कालिमा पूर्ववत् बनी रहेगी।[पग] वहां से आगे जाने पर तुम्हें कनखल के समीप हिमालय से उतरी हुई तथा सगर पुत्रों को स्वर्ग भेजने वाली गंगाजी के पास जाना, जिन्होंने फेनों के द्वारा

पार्वती जी के मुख पर की भ्रू–भंगिमा का मानो उपहास करके, चन्द्रमा को छूती हुई तरंगों रूपी हाथों से युक्त होकर शिवजी के केशों को पकड़ लिया है।

प्रकृति–सुन्दरी के सौन्दर्योपासक कालिदास अमूर्त को मूर्त रूप देने में बड़े दक्ष हैं। उन्होंने नदियों को स्वाधीनपतिका तथा मेघ एवं पर्वतों को दक्षिण अनुकूल नायक के रूप में बड़े चमत्कारपूर्ण ढंग से उपस्थित किया है। प्रकृति के साधारण उपादानों यथा–नदी, पहाड़ आदि ने कलाकार के हाथों में महत्त्वपूर्ण रूप धारण कर लिये हैं।

मेघदूत का पूर्व भाग वाह्य प्रकृति के सौन्दर्य तथा कमनीयता का उज्ज्वल प्रदर्शन करता है तो उत्तर मेघ मानव हृदय के सौन्दर्य तथा अभिरामता का विमल चित्र प्रस्तुत करता है। यक्ष का प्रेम–सन्देश उसके कोमल हृदय का, स्वाभाविक स्नेह का तथा नैसर्गिक सहानुभूति का एक मनोरम प्रतीक है और इस उदात्त प्रेम का अभिव्यंजक काव्य सुषमा के भाव सौष्ठव से मण्डित यह ग्रन्थ रस का अक्षम्य स्रोत है जो दिन–प्रतिदिन और क्षण–प्रतिक्षण आनन्दातिरेक ही करता है।

उत्तर मेघ का आरम्भ कवि अलकापुरी के वर्णन से करता है। इसके वर्णन में वहां की प्रमुख छः ऋतुओं का वर्णन एक ही छन्द में चित्रित किया है जो इस प्रकार है–

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णे शिरीषं
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।[ग]

अर्थात् जहाँ अलकापुरी में रमणियों के हाथ में क्रीडाकमल, बालों में नये–नये कुन्द पुष्पों का बन्धन, मुख पर लोध के फूलों के पराग से गौरवत्व को प्राप्त हुई शोभा, जूड़े में नये कुरबक के फूल, कानों पर सुन्दर शिरीष के फूल और मांग में तुम्हारे आगमन से वर्षा ऋतु में खिलने वाले कदम्ब के फूल रहते हैं। इस प्रकार अलका में षड्ऋतुओं की निरन्तर अवस्थिति की विलक्षण कल्पना को बड़ी निपुणता से साकारता दी गयी है।

हम महाकवि कालिदास को प्रकृति की उपदेशिका के रूप में भी पाते हैं। वे प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान–स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव–जीवन का मार्ग–निर्देश करती है एवं आदर्श प्रस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा का जल प्रदान करके उपकार करता है–

निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः

प्रयुक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव।।[गप]

पपीहा नामक पक्षी के जल मांगने पर मेघ बिना उत्तर दिये ही सीधे जल ही देता है क्योंकि कहा भी जाता है कि जो सज्जन पुरुष होते हैं उनसे अगर कुछ मांगा जाये तो वे मुँख से कुछ कहे बिना ही काम को पूरा करके ही उत्तर देते हैं।

इसके अतिरिक्त अलका के सदैव खिलने वाले फूलों एवं भौरों के गुंजन से युक्त वृक्षों, हंसों की कतारों से घिरी कमलिनियों, चमकने वाले पंखों से युक्त तथा कलरव करने वाले मयूरों एवम् अन्धकार से रहित धवल–चन्द्रिकामयी रजनियों का सुन्दर वर्णन किया गया है। इस भांति सम्पूर्ण मेघदूत प्रकृति के भव्य चित्रों से भरा हुआ है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि कालिदास के प्रकृति वर्णन में अनेक वैशिष्ट्य हैं, कवि मानव सौन्दर्य की तीव्रता तथा यथार्थता के अभिव्यंजन के निमित्त प्रकृति का आश्रय लेता है, तो कहीं यह प्रकृति के ऊपर मानव भावों तथा व्यापारों का ललित आरोप करता है। कहीं वह प्रकृति और मानव के बीच परस्पर गाढ़ मैत्री सहज सहानुभूति तथा रमणीय रम्यात्मक वृत्ति का सम्बन्ध जोड़ता है तो ,कहीं प्रकृति को भगवान की ललित लीला का निकेतन मानकर आनन्द से विभोर हो जाता है। निःसन्देह कालिदास प्रकृति के अन्तस्थल के सूक्ष्म पारखी महाकवि हैं जिनकी दृष्टि प्रकृति के सौम्य रूप माधुर्यतम प्रवृत्ति स्निग्ध सौन्दर्य के ऊपर रीझती है तथा उग्रता और भीषणता से सदा पराङ्मुख रहती है। कालिदास का मेघदूत वास्तव में एक अमूल्य रत्न है। हजारों वर्ष बीत जाने पर आज भी इसको पढ़ने के बाद मन आनन्द से विभोर हो जाता है। ऐसा

प्रतीत होता है मानों आखों के समक्ष पूरे मेघदूत का घटनाक्रम परिलक्षित होता है। ऐसे महान कवि कालिदास एवं उनकी रचना मेघदूत को मेरा शत्–शत् नमन्।।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

[i] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/1।

[ii] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/18।

[iii] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/21।

[iv] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/3।

[v] वीचीक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु।।– महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/29

[vi] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/30।

[vii] दीर्घीकुर्वपटु मदकलं कूजितं सारसानां
प्रत्यूषेषु स्फुटितकमलामोदमैत्रीकषायः।
यत्र स्त्रीणां हरित सुरतग्लानिमङ्गानुकूलः
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः।।– महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/32।

[viii] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/44।

[ix] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 1/53।

[x] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 2/2।

[xi] महाकवि कालिदास, मेघदूतम्, 2/57।